



## काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में गैंडों का जीवन संकट में

### चर्चा में क्यों ?

असम में आई भीषण बाढ़ से काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान का 85 फीसदी हिस्सा डूब चुका है। हाल के समय में काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान को प्रभावित करने वाली यह एक बड़ी आपदा है। इस राष्ट्रीय उद्यान में बाढ़ से अब तक गैंडों के अनेक बच्चों को बचाया जा चुका है।

### प्रमुख बंदि

- काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान के नदिशक के अनुसार, बाढ़ में अभी तक 280 जानवरों की मृत्यु हो चुकी है।
- इनमें से 240 हरिण (जिनमें 224 हॉग हरिण शामिल हैं), 13 सांभर हरिण, तीन दलदल हरिण और 24 गैंडे थे। इन 24 गैंडों में से 15 गैंडे के बच्चे भी थे।
- अंतरराष्ट्रीय प्रकृतिसंरक्षण संघ के अनुसार काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में लगभग 2,000 भारतीय गैंडे हैं।

### भारतीय गैंडा

- वैज्ञानिक नाम : राइनोसीरस यूनिर्कोर्न (Rhinoceros Unicorn)।
- भारतीय गैंडे पहले पूरे भारतीय उप-महाद्वीप में पाए जाते थे। लेकिन, वर्तमान में ये भारत और नेपाल तक ही सीमित हो गए हैं।
- भारत में ये काजीरंगा, ओरंग, पोबतिरा, जलदापाड़ा एवं दुधवा में पाए जाते हैं।

### वशिषताएँ

- इनकी नज़र कमज़ोर होती है परंतु सूंघने एवं सुनने की क्षमता अधिक होती है।
- ये तैर भी सकते हैं।
- इनके सींगों से औषधि बनाई जाती है।
- दुनिया में गैंडे की पाँच प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इनमें से दो प्रजातियाँ अफ्रीका में तथा तीन दक्षिण एशिया में पाई जाती हैं।
- काले और सफेद रंग के गैंडे अफ्रीका के मूल निवासी हैं जबकि भारतीय गैंडा, सुमात्राई गैंडा और जावा का गैंडा एशिया में पाई जाने वाली प्रजातियाँ हैं।

### वर्तमान स्थिति

- सीआईटीईएस (The Convention on International Trade in Endangered Species of Wild Fauna and Flora - CITES) के अनुसार, सुमात्राई गैंडे, जावा के गैंडे एवं अफ्रीकी काले गैंडे 'गंभीर रूप से लुप्तप्राय' जीव हैं जबकि भारतीय गैंडे को 'लुप्तप्राय' के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।
- अवैध शिकार और आवास की कमी के कारण आज लुप्त होने की कगार पर हैं।
- अंतरराष्ट्रीय प्रकृतिसंरक्षण संघ द्वारा इसे लाल डाटा सूची में 'सुभेद्य' (vulnerable) श्रेणी में रखा गया है।

### अंतरराष्ट्रीय प्रकृतिसंरक्षण संघ

- अंतरराष्ट्रीय प्रकृतिसंरक्षण संघ प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण लिये समर्पित एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है।
- यह एक लाल डाटा सूची प्रकाशित करता है जिसमें विश्व की संकटग्रस्त प्रजातियों को दर्शाया जाता है।

### 'सुभेद्य'

- अंतरराष्ट्रीय प्रकृतिसंरक्षण संघ द्वारा ऐसे जीवों को 'सुभेद्य' प्रजातियों के तौर पर चिह्नित किया गया है जिनका अस्तित्व भविष्य में खतरे में पड़ सकता है।
- किसी प्रजाति की 'सुभेद्य' या असुरक्षित स्थिति मुख्यतः उनके आवासीय स्थानों पर प्रतिकूल परिस्थितियों, शिकार, पर्यावरणीय प्रदूषण, बीमारी या अन्य कारणों से हो सकती है।
- ऐसे जीवों की सुरक्षा के उपाय यद्यनिही किये गए तो वे विलुप्त के कगार पर भी पहुँच सकते हैं।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/rhinos-are-in-danger-in-kaziranga-national-park>